साखी (कबीर)

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : 3
पाठ का नाम : साखी (कबीर)
PPT-1

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

हमेशा जीवन के कर्म में विश्वास करते थे वह कभी भी अल्लाह और राम के बीच भेद नहीं करते थे. उन्होंने हमेशा अपने उपदेश में इस बात का जिक्र किया कि ये दोनों एक ही भगवान के दो अलग नाम है. उन्होंने लोगों को उच्च जाति और नीच जाति या किसी भी धर्म को नकारते हुए भाईचारे के एक धर्म को मानने के लिए प्रेरित किया. कबीर दास ने अपने लेखन से भक्ति आन्दोलन को चलाया है. कबीर पंथ नामक एक धार्मिक समुदाय है, जो कबीर के अनुयायी है उनका ये मानना है कि उन्होंने संत कबीर सम्प्रदाय का निर्माण किया है. इस सम्प्रदाय के लोगों को कबीर पंथी कहा जाता है जो कि पुरे देश में फैले हुए है. जब तक मनुष्य के मन में अहंकार होता है तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नही होती। जब उसके अंदर का अंहकार मिट जाता है तब ईश्वर की प्राप्ति होती है। ठीक उसी प्रकार जैसे दीपक के जलने पर उसके प्रकाश से आँधियारा मिट जाता है।

पाठ प्रवेश

यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु द्वारा शिष्य को प्रदान किया जाता है। संत (सज्जन) सम्प्रदाय (समाज) मैं अनुभव ज्ञान (व्यवाहरिक ज्ञान) का ही महत्व है -शास्त्रीय ज्ञान अर्थात वेद , पुराण इत्यादि का नहीं। **कबीर** का अनुभव क्षेत्र बहुत अधिक फैला हुआ था अर्थात **कबीर** जगह -जगह घूम कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे।

संबंधित प्रश्न -

१. प्रत्यक्ष ज्ञान कौन किसे प्रदान करता है?
२. समाज में किस ज्ञान का महत्व है?
३. कबीर ने प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति कहाँ से की ?

सामान्य उद्देश्य -

साखी प्रमाण है कि सत्य का प्रत्यक्ष ज्ञान देता हुआ ही गुरु - शिष्य को जीवन के तत्व ज्ञान की शिक्षा देता है ।

विशिष्ट उद्देश्य-

मधुर वचन , प्रेम का महत्व के बारे में विशेष रूप से उजागर करने से समाज का हित साधन होगा ।

पाठ का सार

इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। ... इसमें कबीर मोह - माया रूपी घर को जला कर अर्थात त्याग कर ज्ञान को प्राप्त करने की बात करते हैं। व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला दिया है अर्थात उन्होंने मोह -माया रूपी घर को जला कर ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

गृहकार्य - पाठ को पढ़कर आना ।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP